

## वर्तमान परिदृश्य में अनुवाद की प्रासंगिकता

अर्चना श्रीवास्तव

इंदिरा गांधी राष्ट्रीय जनजातीय विश्वविद्यालय, अमरकंटक, मध्य प्रदेश, भारत

### प्रस्तावना

वसुदेव कुटुम्बकम की भावना के साथ ही अनुवाद अनिवार्य अंग बन गया। इसीलिए बीसवीं सदी को अनुवाद का युग कहा गया है। वस्तुतः अनुवाद सबसे प्राचीन व्यवसायों में से एक है लेकिन उसकी महत्ता जिस तरह बीसवीं सदी में महसूस की गई वैसे पहले कभी नहीं रही। इसका मूलतः कारण यह है कि इस दौरान विभिन्न भाषाभाषियों के समुदाय सम्पर्क में आए। एक दूसरे की संस्कृति एवं विचारों को समझने का इससे आसान कोई भी साधन प्रतीत नहीं हुआ। यह प्रश्न कि अन्य भाषियों के समुदाय का जड़चेतन (विचार एवं संस्कृति) का अस्तित्व ग्राह्य कैसे ह<sup>®</sup>? समुदाय विशेष की गुणवत्ता एवं जीवन के तत्वों को कैसे जाना एवं आत्मसात किया जा सकता है? तब इसी माध्यम ने राजनीतिक-आर्थिक सेतु का कार्य किया। वैश्विक पटल पर समीकरण को समझने एवं बदलने में अनुवाद की महत्वपूर्ण भूमिका रही। किसी भी भाषा की समझ एवं संस्कृति के संरक्षण हेतु अनुवाद ने एक अचूक हथियार का कार्य करता है।

यह सच है कि अनुवाद आसान कार्य नहीं है सृजन फिर भी कृतिकार के विचार प्रवाहों की प्रस्तुति है लेकिन उसी कार्य की दूसरी भाषा में प्रस्तुति निःसंदेह कृतिनुसार नहीं हो सकती। वह मूल सामग्री से भिन्न होगी ही। अनुवादक लेखक, समीक्षक की भांति विचार ग्रहण कर पुनर्सृजन करने का प्रयास करता है। राष्ट्रीय, अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर विभिन्न राष्ट्रीय के बीच आर्थिक, वैज्ञानिक और प्रौद्योगिक राजनैतिक, साहित्यिक एवं सांस्कृतिक विचारों की चेतना के परस्पर आदान-प्रदान हेतु अनुवाद कार्य की अनिवार्यता एवं महत्ता की नवीन चेतना प्रबल रूप से विकसित हुई। अनुवाद एक अनिवार्य एवं तर्कसंगत स्थिति है। जिस प्रकार थाली में रखे हुए भोजन को मात्र देखने से स्वाद की अनुभूति नहीं हो सकती। ठीक उसी प्रकार विश्व की महानतम कृति अगर अपनी भाषा में नहीं है। अपनी भाषा से परे है तो हम उसकी उदात्ता का अंदाजा कभी भी नहीं लगा सकते हैं। उसका ज्ञान (सबलिमिटी) भी हमारे लिए नीरस है। अनुवाद हम को उसी ज्ञान की उत्कृष्टता क<sup>®</sup> न सिर्फ पहचानन<sup>®</sup> बल्कि आत्मसात् करने का अवसर भी प्रदान करता है।

### अनुवाद की आवश्यकता कई संदर्भ<sup>®</sup> में महसूस की जाती

1. सामाजिक एवं व्यावहारिक,
2. प्रशासनिक,
3. शैक्षणिक एवं ज्ञानात्मक
4. जीविका का साधन

अनुवाद की मुख्य विशेषता अनुवाद सा न लगना है। अनुवाद की यान्त्रिकता के कारण पाठक ऊब जाते हैं।

### सामाजिक क्षेत्र में अनुवाद

दूसरे विश्वयुद्ध के पश्चात् साम्राज्यवाद के टुकड़े होने के परिणामस्वरूप अनेक छोटे- बड़े राष्ट्र स्वतंत्र हुए तथा उनकी अस्मिता का प्रश्न महत्वपूर्ण हो गया। संघीय गणराज्यों के घटक भी अपनी अस्मिता के विषय में सजग होने लगे। इस सम्पर्क, स्थापन तथा अस्मिता विकास की स्थिति में भाषा का केन्द्रीय स्थान है जो हमें बहुभाषिकता की स्थिति के रूप में दिखाई पड़ता है इसके परिणामस्वरूप अनुवाद अब प्रधान रूप से एक सामाजिक आवश्यकता बन गया।

यह मैंने पूर्व में स्पष्ट कर दिया है कि अनुवाद नई विधा नहीं है हमें ईसा पूर्व पहली शाताब्दी में सिसरो के लेखन में अनुवाद चिन्तन के बीज मिलते हैं। इसके बाद भी इस विषय पर विद्वान अपने विचार प्रगट करते रहे हैं। अनुवाद परस्पर संबद्ध शास्त्रों की समन्वित पृष्ठभूमि पर आधारित है न की एकान्वित पृष्ठभूमि पर। और समन्वित पृष्ठभूमि के शास्त्र है संकेत विज्ञान, सम्प्रेषण सिद्धान्त, भाषा प्रयोग सिद्धान्त एवं तुलनात्मक अनुप्रयुक्त भाषा विज्ञान।

अनुवाद एक प्रक्रिया है मूल भाषा से लक्ष्य भाषा में विचारों के सम्प्रेषण की।

“ आवृत्तिनुवादों वा पुनरावर्तन ही अनुवाद है” भृत्हरि

(1) विषय ज्ञान एवं भाषा ज्ञान की कमी को अनुवादक दूसरों की सहायता से भी पूरा कर सकता है। लेकिन प्रतिभा एवं कल्पना की दृष्टि

से अनुवादक को स्वयं के ऊपर ही निर्भर होना होता है। प्राचीन काल में अनुवाद: प्राचीन समय में तीन मूलतः शाखाओं में अनुवाद कार्य परिलक्षित हुआ है। इसका कारण तीन शाखाओं में प्रायः ग्रन्थों की रचना मिलती है। साहित्य, दर्शन एवं धर्मी साहित्यक कृतियों में ग्रीक के इलियड और ओडिसी, संस्कृत में रामायण एवं महाभारत ग्रन्थों का व्यापक स्तर पर अनुवाद हुआ। दर्शन में प्लेटो के संवाद अनुवाद की दृष्टि से लोकप्रिय हुए। धार्मिक रचनाओं में बाइबल के अनुवाद की उपलब्धता व्यापक रही है।

आधुनिक काल में अनुवाद: आज उपर्युक्त ग्रन्थ कई भाषाओं में अनुदित हुए। आज अनुवाद का क्षेत्र विस्तृत हो गया है। उपर्युक्त तीन के अतिरिक्त विज्ञान, प्रौद्योगिकी, चिकित्सा शास्त्र, प्रशासन, कूटनीति, विधि, जनसम्पर्क इत्यादि तथा अनेक क्षेत्रों में अनुवाद हो रहा है एवं प्रकाशित भी हो रहा है। जनसत्ता नियमितरूप से इसका निर्वाहन कर रहा है आज अनुवाद की पृष्ठभूमि में अर्थ एवं राजनीति भी कार्य कर रही है। राष्ट्रों के मध्य समझौता ज्ञापन द्विभाषिक तैयार किए जाते हैं। संयुक्त राष्ट्र में प्रत्येक कार्य (संयुक्त राष्ट्र ने 6 भाषाओं को राजभाषा स्वीकृत किया है: अरबी, चीनी अंग्रेजी फ्रांसीसी रूसी एवं स्पेनी) आज अनुवाद की सामाजिक-राजनीतिक आवश्यकता एक प्रेरक शक्ति बन कर उभरी है भाषायी अल्पसंख्यक वर्ग के लेखकों की रचनाएँ दूसरी भाषाओं में अनुदित होकर अधिक पढ़ी जाती हैं। इस समस्या के सामाधान में अनुवाद अपनी महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहा है। अपेक्षाकृत छोटे तथा बहुभाषी राष्ट्रों को अपने देश के अंदर विभिन्न भाषा भाषी समुदायों के मध्य सम्पर्क स्थापित करने की समस्या का सामना करना पड़ा है।

अनुवाद जीविका का साधन: राजनीतिक, आर्थिक, सांस्कृतिक एवं सूचना प्रौद्योगिकी सहित अन्य आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए अनुवाद एक व्यवसाय के रूप में स्थापित हो चुका है अनुवाद कौशल सिखाने हेतु शिक्षा संस्थाओं में प्रबन्ध किए जा रहे हैं तथा स्वतंत्र रूप से भी प्रशिक्षण संस्थान काम कर रही है।

प्रयोजन मूलक हिन्दी: यह शब्द अंग्रेजी के फंक्शनल हिन्दी शब्द के पर्याय के रूप में आज प्रचलित है। अर्थात् विशेष प्रयोजन या उद्देश्य हेतु प्रयोग की जाने वाली हिन्दी। भाषा के दो पक्ष होते हैं (1) संरचनात्मक पक्ष और प्रयोग पक्ष। भाषा के प्रयोग पक्ष का आशय-समाज द्वारा भाषा का प्रयोग। समाज भाषा का प्रयोग विभिन्न संदर्भ में करता है। प्रयोजन के अनुसार, अभिव्यक्ति के अनुसार, सूचना परंपरा आदि के अनुसार समाज में परिवर्तन निर्धारित होते हैं। इस दृष्टि से भाषा प्रयोग किए जाने बात समाज या भाषा प्रयोग समूह भिन्न-भिन्न होते हैं। कार्यालय बँक, रेलवे, हवाई अड्डा, विश्वविद्यालय, विषय विशेष पर आधारित संस्थान या तकनीकी व व्यवसायिक संस्थान कोर्ट, साहित्य, चिकित्सा इनमें भाषा के प्रयोग में विविधता देखी जा सकती है, इन भाषाओं का अनुवाद भी विविधतापूर्ण, शब्दावली एवं वर्तनी की मांग रखता है। प्रत्येक क्षेत्र का अनुवाद विशेष प्रकार का कौशल परीक्षण चाहता है। आज बहुविध क्षेत्रों में प्रयोजन मूलक हिन्दी अनुवादको के कौशल से अपनी जगह सुनिश्चित कर रही है, अतः हम कह सकते हैं कि भाषा का प्रयोग रूप ही प्रयोजन मूलक है।

डाॅ. भोलानाथ तिवारी के अनुसार कार्यालयी हिन्दी कार्यालय कई प्रकार के होते हैं और उनमें भाषा के स्तर पर अंतर होता है। जैसा कि उपर्युक्त वर्णित है।

हिन्दी भाषा की अत्यंत सर्वपयोगी प्रयुक्तियाँ, कार्यालयी प्रयुक्तियाँ या प्रशासनिक क्षेत्र की प्रयुक्तियाँ हैं। अद्यतन, अग्रेषण, पर्यवक्षण, मिसिल, एव आवक-जावक, अभ्यर्थी, अनुमोदन, प्रेषित इन शब्दों का प्रयोग कार्यालयी हिन्दी में होता है। अन्य क्षेत्रों में नहीं यहाँ एक विषय के संदर्भ में एक शब्द का एक निश्चित अर्थ होता है, चाहे सामान्य शब्दों में दो तीन शब्द एक ही अर्थ में क्यों न प्रयुक्त होते हों। उदाहरण

शब्द सामान	भाषा में अर्थ	कार्यालयी भाषा में अर्थ
(1) स्वीकृति		Sanction
मंजूरी	Approval	Approval
अनुमति		Permission
(2) आदेश		Order
निदेश	Order	Direction
अनुदेश		Instruction

### प्रशासनिक अभिव्यक्तियाँ विशिष्ट होती हैं

1. कार्रवाई अपेक्षित नहीं।
2. मसौदा अनुमोदन के लिए प्रस्तुत है।
3. सुझावार्थ पेश है।
4. पत्र अग्रेषण हेतु प्रस्तुत।

इन अभिव्यक्तियों का प्रयोग अन्य क्षेत्रों में नहीं होता है।

अनुवाद के सहायक अंग

प्रशासनिक अनुवाद में सबसे प्रमुख समस्या शब्दों की होती है। वैज्ञानिक एवं तकनीकी शब्दावली आयोग द्वारा प्रकाशित प्रशासनिक शब्दावली, शब्दावली की समस्या को काफी हद तक सुलझा देती है। शब्दावली का प्रयोग अनुवाद के क्षेत्र में कार्यरत महानुभावों को करना होता है। अतः उनका ज्ञान एवं विवेक शब्दावली प्रयोग में और सरलता ला सकता है।

### अनुवादक के कार्य

अनुवादक के बिना अनुवाद की बात अधूरी है प्रशासन के क्षेत्र में शब्दानुवाद महत्वपूर्ण होता है प्रशासनिक भाषा की प्रकृति तकनीकी होती है। जबकि साहित्यिक क्षेत्र में भावनुवाद कार्यालयी भाषा वह भाषा है जिसमें प्रशासन का कामकाज निपटाया जाता है इसे ही राजभाषा या ऑफिसियल लैंग्वेज की संज्ञा दी जाती है।

दुनिया की किन्ही दो भाषाओं में अर्थ के स्तर पर या रचना के स्तर पर पूर्णता: समानता नहीं मिलती है। प्रत्येक भाषा की एक भौगोलिक सीमा, विशिष्ट प्रकृति, ध्वन्यात्मकता, शब्दात्मकता, पदात्मकता, वाक्यात्मकता, अर्थ विषयक तथा कहावतों- मुहावरों विषयक विशेषताएँ होती हैं। परिणामस्वरूप एक भाषा के विचारों की अभिव्यक्ति दूसरी भाषा में अत्यंत कष्ट साध्य कार्य है। अतः अनुवाद का स्वरूप उतना सहज और सरल नहीं है। जितना उपरी तौर पर देखने

से लगता है।

1. अनुवाद में सांस्कृतिक संदर्भ को अक्षत रखना अनुवादक की सफलता का परिचायक है। स्रोत भाषा की संस्कृति अनुवाद की दृष्टि से अत्यंत महत्वपूर्ण कार्य है किन्तु उन्हें लक्ष्य भाषाभाषी तक पहुँचना भी आवश्यक है। अनुवादक अनुवाद से सांस्कृतिक सेतुबंध का कार्य करता है इसीलिए अनुवाद को सेतु मानना तर्कसंगत है। अनुवादक ही है जो पाठकों को वस्तुता स्रोत भाषा सामग्री से लक्ष्य भाषा की ओर ले जाता है।
2. अंग्रेजी भाषा की पाठ्य सामग्री का हिन्दी भाषा में यथावत् सम्प्रेषण अपेक्षित है। श्रेष्ठ अनुवाद मूल सामग्री को यथावत् लक्ष्य सामग्री में प्रस्तुत करता है। मूल की समानता तथा जीवंत अनुवाद को सक्षम बनाती है कई बार अनुवादक अपनी ओर से कुछ जोड़ने एवं छोड़ने के साथ पुनर्रचना करते हैं। यही चीज अनुवाद को मूल रचना से दूर ले जाती है। इसीलिए कई बार अनुवाद का विरोध भी किया जाता है। लेकिन सही अभिव्यक्ति के प्रयास में जोखिम उठाना पड़ता है।
3. अनुवाद में जटिलता का आ जाना: शब्दों का चयन एवं सम्प्रेषण अनुवादक के कौशल एवं विवेक पर निर्भर करता है। कई बार वह शब्दों के चयन के मोह से सम्प्रेषणनीयता को प्रभावित कर देता है। अतः क्रोचे ने इसके विरोध में कहा कि अनुवाद मूल अभिव्यंजना का पुनः सृजन नहीं बल्कि मूल से न्यूनाधिक रूप से मिलती-जुलती समान अभिव्यंजना का सृजन है।
4. अनुवाद का स्वरूप तय करना बड़ी चुनौती : एक भाषा में कही गई बात कथन शैली और कथ्य दोनों के साथ दूसरी भाषा में व्यक्त करना वाकई संभव नहीं होता। इसलिए यह मान लेना की थोड़ा अंतर होना तो स्वाभाविक है ठीक रहेगा। इस स्थिति में सम्पूर्ण समतुल्यता अत्यंत मुश्किल है।

### भारत की समृद्ध विरासत में अनुवाद का स्थान नगण्य

अनुवाद आज समय की महती आवश्यकता है। फिर भी हमारे पूर्वजों ने प्राचीन काल में इस संकल्पना को स्वीकार नहीं किया। प्रतीत होता है कि इसका कारण ऋषियों मुनियों के एक छत्र ज्ञान की पताका का लहराना रहा होगा। भारत की देवभूमि के रत्न, हमारी देश भाषा संस्कृत के ज्ञान की श्रेष्ठतम सीमाओं के संचालक रहे होंगे तभी हम को कहीं से कुछ ज्ञान प्राप्त करने हेतु अनुवाद का आश्रय न लेना पड़ा। हमारे ज्ञान ने विश्व को आलोकित किया। इसका उदाहरण ग्रन्थों का विदेशी शोधार्थियों द्वारा अपनी भाषा में अनुवाद है। प्राचीन समय में सृजन हमारे पूर्वजों का लक्ष्य रहा होगा।

संस्कृत साहित्य प्रत्यक्ष प्रमाण है कि अपनः आप में संपूर्ण उत्कृष्ट एवं अद्वितीय साहित्य आज भी कई माध्यमों से विश्व का पथ प्रदर्शन कर रहा है। और आज भी संपूर्ण, संस्कृत साहित्य की ज्ञान की गाँठें सुलझी नहीं है। कई शोधार्थी इस क्षेत्र में प्रयासरत हैं। यह हमारा अप्रतिम ज्ञान ही उत्कृष्टता को व्याख्यायित करता है। संस्कृत में अनुवाद का प्रयोग गुरु की बात का शिष्य द्वारा दोहराव है। हमारा प्राचीन साहित्य मौखिक रूप से हजारों वर्षों तक संरक्षित एवं प्रवाहमान बना रहा। फिर

एक समय आया जब संस्कृत साहित्य पुस्तकालयों में बंद हो गया और हम अंग्रेजी के मानसिक गुलाम बन गए। अपनी सृजन शक्ति को तिलाजलि दे पुन अंग्रेजों की भाषा के प्रायोजित ज्ञान को हिन्दी में अनुवाद कर उतारने लगे। यह सच है कि संविधान क अनुच्छेद 346 के अनुसार हिन्दी भाषा समृद्ध हो रही है। लेकिन अनुकरण व सृजन में बहुत अंतर है।

आज अनुवाद के माध्यम से हिन्दी भाषा समृद्ध हो रही है प्रत्येक राज्य में साहित्यिक अकादमियों एवं प्रदेश प्रचार समिति, सभा, साहित्य परिषद अनुवाद परिषद अनुवाद पर बल दे रही है क्षेत्रीय भाषाओं से अनुवाद करने पर पुरस्कार, वेतन एवं प्रोत्साहन भी प्रदान दिए जा रहे हैं।

भारतीय परंपराओं में Implementation (कार्यान्वयन) का चलन रहा है Imitation (अनुकरण) का नहीं। लेकिन अंग्रेजी की गुलामी ने हमको मानसिक रूप से इस तरह गुलाम बना दिया कि इस जकड़न का इलाज हम आज भी सृजन कर प्रारंभ नहीं करना चाहते। एक उदाहरण अधिकांश संस्थाओं का प्रारंभ होता है तब ea=ky; या संस्थानों से फाइल ला कर कार्य शुरू किए जाते हैं। ये वर्षों पुरानी फाइलें अंग्रेजी में उपलब्ध हैं। पुरानी फाइलों को देखकर नया मसौदा तैयार करने की परिपाटी ने अंग्रेजी को बनाए रखा। प्रशासन में हिन्दी को हिन्दी अनुवादकों एवं हिन्दी अधिकारियों पर छोड़ दिया गया।

अनुवाद की मांग भी बहुत बढ़ी है विश्वविद्यालय मांग के अनुरूप अच्छे परिश्रमी एवं पूर्णतः प्रशिक्षित अनुवादकों की पूर्ति नहीं कर पा रहे हैं। परिणामस्वरूप केन्द्र सरकार, राज्य सरकार, बैंक, बीमा कंपनियों, उपक्रमों आदि में अनुवाद से संबंधित पद रिक्त पड़े हैं। एक कैरियर के रूप में इस दिशा में विश्वविद्यालय को एक पहल करने की आवश्यकता है। स्कूल स्तर पर स्कूल में जागरूकता फैलाई जाय अनुवाद विभाग स्थापित किए जाना चाहिए। इस दिशा में कार्य करने की आवश्यकता है। स्कूलों में एक विषय प्रवेश पुस्तिका को समावेश होना चाहिए जिसमें विद्यार्थियों को दो भाषा के साथ स्नातक में प्रवेश लेकर शीघ्र रोजगार पाने के संदर्भ में जानकारी ह<sup>®</sup> ताकि देश को इस समस्या से काफी हद तक छुटकारा मिल सकता है प्रत्येक विश्वविद्यालय आवश्यकतानुसार पाठ्यक्रम विकसित करना सुनिश्चित करें। विद्यार्थियों को इस दिशा में चिंतन मनन का अवसर प्रदान किया जाना चाहिए। कई विश्वविद्यालय में अनुवाद के पाण््यक्रम संचालित हैं लेकिन स्नातक स्तर दो भाषाओं ज्ञान या एक भाषा माध्यम आवश्यक है लेकिन स्नातक के पूर्व विद्यार्थियों को पता नहीं होता है कि इस प्रकार विषय का चुनाव उनके कैरियर को सुनिश्चित कर सकता है। हर भाषा एक समुदाय विशेष की प्रस्तुति का माध्यम है। अतः विश्व की प्रत्येक भाषा सम्माननीय एवं संरक्षण योग्य है। लेकिन मातृभाषा का विकल्प नहीं।

### संदर्भ सूची

1. भाटिया सं. कैलाश चन्द्र, भारतीय भाषाएं और हिन्दी अनुवाद समस्या समाधान, वाणी प्रकाशन नई दिल्ली तृतीय संस्करण - 2004।

2. गुप्ता विभा, अनुवाद के भाषिक पक्ष, वाणी प्रकाशन नई दिल्ली-2007
3. डाॅ. कलवार किशोरीलाल, हिन्दी अनुवाद परंपरा एक अनुशीलन, नवभारत प्रकाशन, नई दिल्ली-2009
4. डाॅ. कुमार सुरेश, अनुवाद सिद्धान्त की रूपरेखा, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली 1996
5. Sara Hatim, Translation and Linguistics Magnum publishing New York United States of America – 2017
6. Clifford E. Landers New Jersey City University, Literary Translation A Practical Guide, Multilingual Matters Ltd. England - 2010
7. Edited by Simona Bertacco, Language and Translation in Postcolonial Literatures, Post-Colonial Routledge New York and Landan. 2014
- 8<sup>प</sup> Gunilla Anderman Margaret Rogers eds, Translation Today, Multilingual matters ltd clevedon England. 2010